



**Motherhood International Journal of Multidisciplinary
Research & Development**

A Peer Reviewed Refereed International Research Journal

Volume IV, Issue I, July 2019, pp. 01-11

ONLINE ISSN-2456-2831



**“सी० बी० एस० ई० बोर्ड तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में आत्मविश्वास तथा परीक्षा
चिन्ता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन”**

नजमुस सहर, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग,
गर्ग पी० जी० कालेज—लक्सर (हरिद्वार), उत्तराखण्ड

सारांश

यह अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत इण्टरमीडिएट के विद्यार्थियों पर परीक्षा चिन्ता का आत्मविश्वास पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह देखने के लिये किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श में 250 सी०बी०एस०ई० बोर्ड तथा 250 उत्तराखण्ड बोर्ड के विद्यार्थी थे। इस अध्ययन के मापन के लिये, मापन प्रविधियों को आधार बनाया गया है। चरों के मध्य सह-सम्बन्ध की तुलना करने के लिये सह-सम्बन्ध गुणांक, टी-परीक्षण तथा काई वर्ग का प्रयोग किया गया है। दोनों बोर्डों के विद्यार्थी आज की तेजी से परिवर्तित परिस्थितियों के प्रति जागरूक हैं और भविष्य में उत्पन्न होने वाली हर समस्या का सामना करने को तैयार हैं। शायद यही कारण है कि सी०बी०एस०ई० बोर्ड तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में शोधार्थी को सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला। जबकि उत्तराखण्ड बोर्ड की मूल्यांकन प्रणाली सी०बी०एस०ई० बोर्ड की मूल्यांकन प्रणाली से जटिल है। इसलिए सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की अपेक्षा कम होती है।

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। जिससे वह समाज का एक उत्तरदायी तथा चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का प्रयोग करने की भावना से प्रेरित होकर अपनी सभ्यता का पुनर्उत्थान करने के लिए प्रेरित हो सके। शिक्षा एक सापेक्ष चेतन अथवा अचेतन, मनोवैज्ञानिक सामाजिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक वातावरण सम्बन्धी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व सम्बन्धी सभी अंगों का विकास इस प्रकार से होना चाहिए कि वह परिवर्तन विरोधी तथा रचनात्मक साधनों के द्वारा सच्चा सुख व आनन्द प्राप्त कर सके।

वातावरण के साथ अभियोजन स्थापित करने में मनुष्य के लिए उसकी शारीरिक क्रियाएँ कम महत्वपूर्ण होती हैं। मनुष्य की अनेक क्रियाएँ जिनकी योग्यता उसमें होती है वे शारीरिक नहीं हैं। ये क्रियाएँ मानसिक क्रियाएँ कहलाती हैं। इस वर्ग की क्रियाओं में प्रत्यक्षीकरण, याद करना, कल्पना, चिन्तन, विभेदन, इच्छा, निर्णय, तर्क आदि प्रमुख हैं। यह मनुष्य की विभिन्न क्रियाएँ होती हैं। मनुष्य में इन मानसिक योग्यताओं और क्रियाओं के अधिक विकसित होने के ही कारण वह केवल अपनी वर्तमान घटनाओं और तथ्यों तथा भविष्य में जिनके घटित होने की सम्भावना है। उसमें भी मुकाबला समानतापूर्वक कर पाता है। बालक नई क्रियाओं को सीखने में अपेक्षाकृत कहीं अधिक समय लेते हैं, क्योंकि इसके सीखने में शारीरिक क्रियाओं की भूमिका कम महत्व रखती है। बालक अधिगम में मानसिक क्रियाओं Ex –प्रत्यक्षीकरण, याद करना, स्मृति, कल्पना, तर्क, चिन्तन, इच्छा, निर्णय आदि अधिक प्रमुख

भूमिका अदा करती हैं। बालक का प्रत्यक्षीकरण, स्मरण, कल्पना, चिन्तन, विभेदन-क्षमता, चयन, निर्णय लेने, तर्क आदि मानसिक क्रियाएँ परिमार्जित एवं परिवर्द्धित होती रहती है। मनुष्य के सतत् प्रयत्नों से यह मानसिक क्रियाएँ अधिक से अधिक जटिल, विधि, विकसित और सूक्ष्म होती जाती है। जो क्रियाएँ मानव में उसके जटिल वातावरण के साथ अनुकूल हेतु विकसित होती हैं, उनमें कुछ मानसिक दशाएँ और प्रक्रियाएँ आदि भी उस समय उत्पन्न होती है जब वह नाना प्रकार की शारीरिक और मानसिक क्रियाएँ करता है। इन दशाओं और प्रक्रियाओं से उसे संज्ञान होता है। इन मानसिक दशाओं की अनुभूति मनुष्य को सुख-दुःख की अनुभूति तथा क्रोध, भय, प्रेम, घृणा, द्वेष, चिन्ता आदि संवेगों द्वारा होता है। मानव जीवन में इन भावनाओं और संवेगों के महत्व का अनुभव सभी को है। इन भावनाओं में भी मानव जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन और परिमार्जन होते हैं।

‘ बालक सामाजिक वातावरण में रहता है, इसी वातावरण से ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति होती है, बालक के चारों ओर के वातावरण में उपस्थित व्यक्ति और वस्तुएँ समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं होती है, इनमें से कुछ अधिक महत्वपूर्ण होती हैं और कुछ कम, बालक की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति कभी सरल ढंग से हो जाती है और कभी इस प्रकार की पूर्ति में समय अधिक लगता है, तब उसमें तनाव उत्पन्न हो जाता है। वह कभी क्रोधित होता है, कभी दुःखी कभी निराश तथा कभी चिन्ता का अनुभव करता है। वातावरण में उपस्थित उद्दीपक व्यक्ति की आवश्यकताओं को एक ओर सन्तुष्ट करते हैं इस सन्तुष्टि से व्यक्ति का तनाव कम हो जाता है। दूसरी ओर यह उद्दीपक कष्ट देकर तनाव को भी बढ़ा देते हैं, जब व्यक्ति इन वातावरण के खतरों का सामना करने में तैयार नहीं होता है तब वह भयभीत और चिन्ता से ग्रस्त हो जाता है, जब व्यक्ति चिन्तित होता है तब उसे भूख, प्यास नहीं लगती और उसमें शारीरिक आवश्यकताएँ भी उत्पन्न नहीं होती। आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति को अपनी चिन्ता का कारण ज्ञात ही हो कभी-कभी चिन्ता का कारण ज्ञात नहीं हो सकता है।

चिन्ता एक सामान्य लक्षण है जो आधुनिक युग के सभी व्यक्तियों में होती है, गम्भीर चिन्ता अनेक प्रकार से मानव जीवन को प्रभावित करती है, जब व्यक्ति तनावपूर्ण परिस्थिति से घिर जाता है तो उसमें पहली सांवेगिक अनुक्रिया होती है, वह चिन्ता की होती है। जीवन की चुनौतियों की एक लम्बी श्रृंखला है, जो सफलता पाने की अपेक्षाओं से भरी होती है। युवा एवं छात्रों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में से एक है, “परीक्षा चिन्ता”, यह वही समय है, जब तनाव व चिन्ता छात्रों के बीच में तेजी से बढ़ने लगती है। इसके लिए जरूरी है कि तनावपूर्ण स्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण रखा जाए। परीक्षा की तिथियां ज्यों-ज्यों नजदीक आती हैं विद्यार्थियों में परीक्षा चिन्ता दिखाई देने लगती है, जैसे तो परीक्षा के पूर्व मानसिक तनाव एक सामान्य बात कही जाती है, किन्तु परीक्षा को लेकर परीक्षा चिन्ता और मानसिक तनाव तथा परीक्षा को लेकर जागरुकता तथा आत्मविश्वास में अन्तर है। दोनों अलग-अलग मनः स्थितियां हैं। जागरुकता तथा आत्मविश्वास तो हर अच्छे विद्यार्थियों में होनी चाहिए, किन्तु तनाव नहीं, तनाव जहां चिन्ता का एक रूप जिसका प्रभाव सदा अहितकर होता है। जबकि जागरुकता तथा आत्मविश्वास से अच्छे परिणाम की आशा की जा सकती है, जहाँ जागरुकता तथा आत्मविश्वास स्वच्छ मनोवृत्ति का द्योतक है, वहीं चिन्ता या तनाव नकारात्मक स्थिति का बोध कराता है, तनाव का सम्बन्ध चिन्ता व घबराहट से होता है, जबकि जागरुकता और आत्मविश्वास का सम्बन्ध गम्भीरता व चिन्तन से, परीक्षा चिन्ता तथा मानसिक तनाव में वृद्धि विद्यार्थी के लिए अहितकर हो सकती है, परीक्षा चाहे वह किसी भी स्तर की है, परीक्षार्थी परीक्षा चिन्ता से स्वयं दूर रखे तो बेहतर होगा। अतः विद्यार्थियों में पढ़ाई और परीक्षा के प्रति गम्भीरता होनी चाहिए न कि उसे लेकर चिन्ता और तनाव, विद्यार्थी आज करने वाली परीक्षा की तैयारी को कल के भरोसे छोड़ते जाते हैं, और वह कल उनके लिए कभी नहीं आता है, परिणाम यह होता है कि जब परीक्षा प्रारम्भ होने में कुछ ही दिन शेष रह जाते तो विद्यार्थी और अन्ततः परिणाम प्रभावित होता है, परीक्षा के पूर्व घबराहट व परीक्षा चिन्ता का यह एक प्रमुख कारण होता है।

दूसरी ओर जो विद्यार्थी पढ़ाई के प्रति गम्भीर रहते हैं या परीक्षा को लेकर उनमें आत्मविश्वास भरा रहता है, तथा परीक्षा के प्रति वे जागरुक रहते हैं उनके परीक्षा परिणाम अच्छे रहते हैं तथा वह परीक्षा में अच्छी उपलब्धि

हासिल करने में सफल होते हैं, जीवन में सफलता पाने के लिए आत्मविश्वास की शक्ति सर्वाधिक आवश्यक है, आत्मविश्वास के अभाव में किसी कामयाबी की कल्पना नहीं की जा सकती है, आत्मविश्वास के सहारे कठिन से कठिन लक्ष्य को प्राप्त करना भी सरल हो जाता है।

जीवन की समृद्धि एवं विकास के लिए परीक्षा एक आवश्यक उपकरण है। प्रतिस्पर्धा का अपना एक गणित है, सफलता और असफलता इसके आवश्यक पहलु होते हैं। अवसर तथा भाग्य उसके प्रमुख कारक हैं, परिश्रम और प्रतिभा प्रकटीकरण के लिए भी प्रतिस्पर्धा में निहित मानक होते हैं। इन मानकों के बाहर का परिणाम या प्रतिभा किसी भी स्पर्धा के लिए महत्वहीन होती है, परीक्षाएँ भी प्रतिस्पर्धा के इन्हीं गुणों से लवरेज होती हैं। जैसे हमने जीवन में परीक्षा की अनिवार्यता को स्वीकार किया है, वैसे ही हमारी सफलता दोनों क्षेत्रों स्कूल तथा जीवन में सुनिश्चित हो जाती है, परीक्षा चिन्ता स्वयं द्वारा निर्मित एक कोरी कल्पना मात्र है। जैसे ही परीक्षा के विषय में गम्भीर होते हैं, वैसे ही हमारी उदासीनता के बादल छट जाते हैं। असफलता का डर मन से हटते ही हमारे अन्दर की असीम शक्ति प्रकट हो जाती है।

छात्र के अन्दर यदि आत्मविश्वास है तो उसमें प्रायः परीक्षा चिन्ता कम देखी जाती है, आत्मविश्वास अर्थात् स्वयं की क्षमताओं पर विश्वास होना आवश्यक है। यदि हमें अपने पर विश्वास नहीं है तो समझे कोई भी हम पर विश्वास नहीं करेगा, ईश्वर ने हमें **Super Computer** से भी अधिक आधुनिक तथा तेज गति वाला मस्तिष्क दिया है, हमें अपने जीवन की असफलताओं एवं दुःखों के लिए ईश्वर या अन्य किसी पर दोषारोपण नहीं करना चाहिए, जैसे कि **Super Computer** का उपयोग एक तीव्रगति से अच्छा परिणाम देने के लिए किया जाता है, उसी प्रकार के आश्चर्यचकित देने वाले परिणाम हम अपने मस्तिष्क का सही प्रयोग करके दे सकते हैं। जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं है, इसके लिए आत्मविश्वास का होना आवश्यक है, छात्र को अपने आत्मविश्वास को जगाने के लिए इस वाक्य को प्रतिदिन अधिक से अधिक दोहराना चाहिए कि मैं यह कर सकता हूँ, इसलिए मुझे यह करना है, यह छात्र जीवन में उच्च कोटि की सफलता प्राप्त करने का एक अचूक मंत्र हो सकता है। यह मंत्र जीवन में पूरी तरह तभी सफल होगा जब हम अपने अन्दर एकाग्रता, निरन्तर प्रयास, आत्मानुशासन तथा आत्मनियंत्रण के गुणों को भी विकसित करेंगे। परीक्षाओं के समय यह वाक्य हमारी सुनिश्चित सफलता के सोच को विकसित करता है, जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास का अभाव होगा वह अन्य चीजों पर किस प्रकार विश्वास उत्पन्न कर सकता है, और सफलता भी ऐसे अविश्वासी व्यक्तियों से हमेशा दूर रहती है। सफलता के लिए एकाग्रता का होना उतना ही आवश्यक है जितना आत्मविश्वास। यही सूत्र हमें सफलता की ओर ले जाता है। अर्थात् आशा, उत्साह और आत्मविश्वास तीनों में अगर समानता है तब तो सफलता स्वयं कदम चूमती है, अगर परिणाम पूर्ण लगन और संयम के साथ किया गया है, तब सफलता मिलनी निश्चित है। हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए एकाग्रचित होना अत्यधिक आवश्यक है।

परीक्षा चिन्ता हर छात्र में पायी जाती है, परीक्षाओं में अच्छे अंक नहीं ला पाने की निराशा, बच्चों में मानसिक तनाव पैदा करती है, जीवनचर्या पर मानो आपातकाल लागू हो जाता है, परीक्षाओं का आपातकाल हमारे आत्मविश्वास, आत्मबल को आशंकाग्रस्त एवं भयमुक्त वातावरण की ओर ले जाता है। छात्र इस तनाव को झेलते हुए शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता का अनुभव करते हैं, जो छात्र पूरे वर्ष भर दिन-रात मेहनत, धैर्य, लगन के साथ परीक्षा तैयारियों में जुटे रहते हैं उनमें परीक्षा को लेकर आत्मविश्वास भरा रहता है, यही आत्मविश्वास परीक्षा में उन्हें अच्छे परिणाम प्रदान करता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया है कि जो छात्र पूरे वर्ष भर मेहनत तथा लगन के साथ परीक्षा तैयारी में जुटे रहते हैं क्या उनमें भी परीक्षा चिन्ता पाई जाती है या नहीं। जिन छात्रों में परीक्षा को लेकर आत्मविश्वास भरा रहता है उन छात्रों में परीक्षा चिन्ता पायी जाती है या नहीं। परीक्षा चिन्ता का आत्मविश्वास पर क्या प्रभाव पड़ता है। परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में किस प्रकार का सहसम्बन्ध होता है।

शोध के उद्देश्य: शोधकर्ता के शोधकार्य से सम्बन्धित उद्देश्य निम्नलिखित हैं

1. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
2. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता का अध्ययन करना।
3. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
4. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता का अध्ययन करना।
5. सी०बी०एस०ई० बोर्ड तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. सी०बी०एस०ई० बोर्ड तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।
8. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में आत्मविश्वास का स्तर सामान्य होता है।
2. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता का स्तर सामान्य होता है।
3. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में आत्मविश्वास का स्तर सामान्य होता है।
4. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता का स्तर सामान्य होता है।
5. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों का आत्मविश्वास उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की अपेक्षा अधिक होता है।
6. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की अपेक्षा कम होती है।
7. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।
8. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में धनात्मक सह सम्बन्ध होता है।

शोध अध्ययन की विधि – प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण शोध विधि पर आधारित है। इसमें कारणात्मक तुलनात्मक तथा सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध जनसंख्या – इस शोध में उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जनपद के सभी सी०बी०एस०ई० बोर्ड तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध न्यादर्श – शोध जनसंख्या में देहरादून जनपद के सी०बी०एस०ई० बोर्ड के 250 तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के 250 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श में रूप में चुना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध चर :

1. सी०बी०एस०ई० बोर्ड
2. उत्तराखण्ड बोर्ड
3. परीक्षाचिन्ता
4. आत्मविश्वास

शोध में प्रयुक्त उपकरण – छात्रों में चिन्ता स्तर को मापने के लिए Student Examination Anxiety Test (SEAT) तथा आत्मविश्वास के स्तर को मापने के लिए Pandey Self Confidence Inventory का प्रयोग किया गया है।

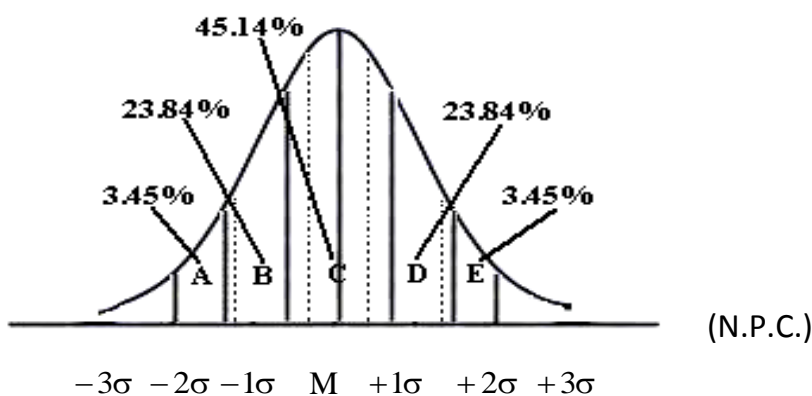
शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी आंकड़ों के विश्लेषण के लिए टी-टेस्ट, सहसम्बन्ध गुणांक तथा काई वर्ग की गणना की गई।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

1.सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में आत्मविश्वास का अध्ययन।

शून्य परिकल्पना:

सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं अन्तर नहीं होता है।



तालिका नं०- 1

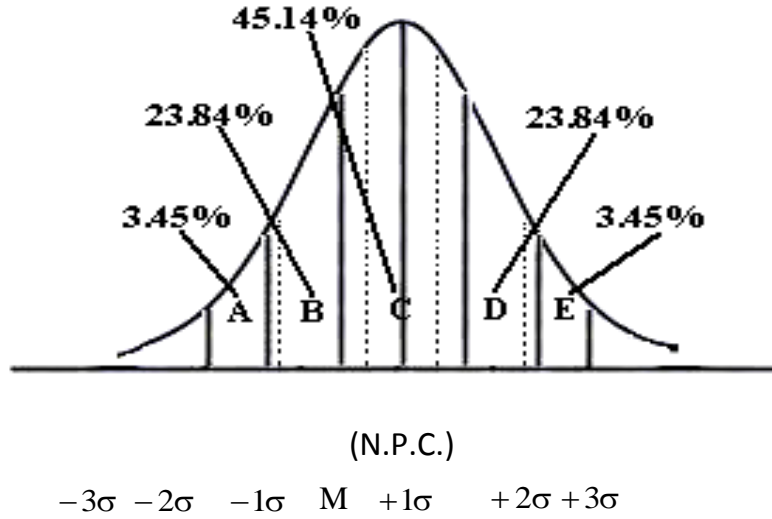
	A	B	C	D	E	
Level of Sefl	Very High Self Confidence	High Self Confidence	Average Self Confidence	Low Self confidence	Very low Self Confidence	Total
Fo	07	108	108	27	0	250
Fe	08	60	114	60	08	250
χ^2	64.99					

परिगणित या Calculated χ^2 का मान हमारी तालिका के मान 0.05% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से बहुत अधिक है। अतः यहां पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है और कहा जा सकता है कि सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

2.सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता का अध्ययन।

शून्य परिकल्पना:

सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।



तालिका नं०- 2

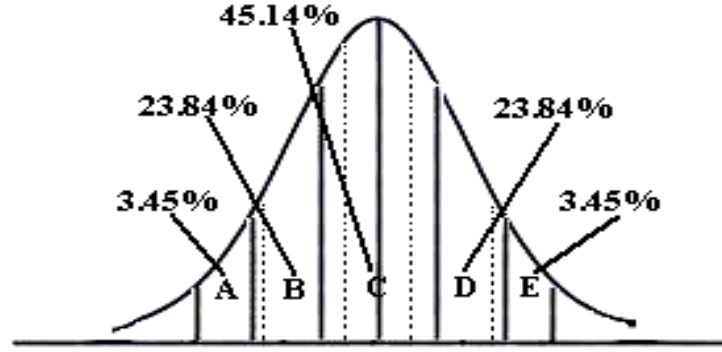
	A	B	C	D	E	
Level of Anxiety	Extremely High Anxiety	High Anxiety	Normal Anxiety	Low Anxiety	Extremely Low Anxiety	Total
Fo	80	04	85	34	47	250
Fe	08	60	114	60	08	250
χ^2	877.05					

परिगणित या Calculated χ^2 का मान हमारी तालिका के मान 0.05% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से बहुत अधिक है। अतः यहां पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है और कहा जा सकता है कि सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

3. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में आत्म विश्वास का अध्ययन।

शून्य परिकल्पना:-

उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं होता है।



(N.P.C.)

$$-3\sigma \quad -2\sigma \quad -1\sigma \quad M \quad +1\sigma \quad +2\sigma \quad +3\sigma$$

तालिका नं०- 3

A B C D E

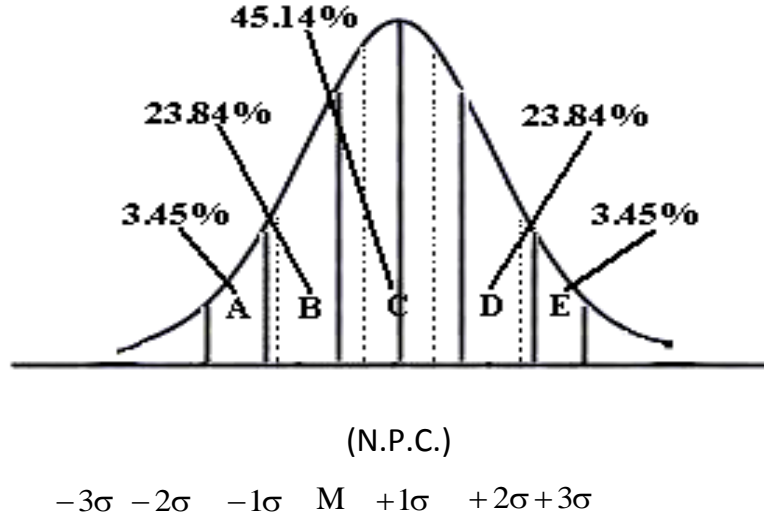
Level of Sefl	Very High Self Confidence	High Self Confidence	Average Self Confidence	Low Self confidence	Very low Self Confidence	Total
Fo	06	107	127	10	0	250
Fe	08	60	114	60	08	250
χ^2	88.47					

परिगणित या Calculated χ^2 का मान हमारी तालिका के मान 0.05% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से बहुत अधिक है। अतः यहां पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है और कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर होता है।

4. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता का अध्ययन।

शून्य परिकल्पना:

उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता का अध्ययन।



तालिका नं०- 4

	A	B	C	D	E	
Level of Anxiety	Extremely High Anxiety	High Anxiety	Normal Anxiety	Low Anxiety	Extremely low anxiety	Total
Fo	61	25	85	35	44	250
Fe	08	60	114	60	08	250
χ^2	548.32					

परिगणित या Calculated χ^2 का मान हमारी तालिका के मान 0.05% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से बहुत अधिक है। अतः यहां पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है और कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

तालिका संख्या-5

5.सी०बी०एस०ई० तथा यू०के० बोर्ड के छात्रों के मध्य आत्मविश्वास की तुलना।

शून्य परिकल्पना

सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

बोर्ड	छात्रों की संख्या	माध्य	प्रमाणिक विलन	क्रान्तिक अनुपात
सी०बी०एस०ई० बोर्ड	250	23.63	12.22	1.209
उत्तराखण्ड बोर्ड	250	24.60	6.804	

परिगणित या Calculated t-value का मान हमारी तालिका के मान 0.05% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से कम है। अतः यह शून्य पर परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या-6

6.सी०बी०एस०ई० बोर्ड तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के मध्य परीक्षा चिन्ता की तुलना।

शून्य परिकल्पना

सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

बोर्ड	छात्रों की संख्या	माध्य	मानक विलन	क्रान्तिक अनुपात
सी०बी०एस०ई० बोर्ड	250	16.092	7.11	2.42
उत्तराखण्ड बोर्ड	250	17.644	7.20	

परिगणित या Calculated t-value का मान हमारी तालिका के मान 0.05% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः यहां पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है और शोध की परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की अपेक्षा कम होती है।

तालिका संख्या-7

7.सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता आत्म विश्वास में सहसम्बन्ध का अध्ययन।

शून्य परिकल्पना

सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं होता है।

सी०बी०एस०ई० बोर्ड	छात्रों की संख्या	माध्य	मानक विचलन	सह-सम्बन्ध गुणांक
परीक्षा चिन्ता	250	16.092	7.11	0.88
आत्मविश्वास		23.53	12.22	

तालिका के अनुसार सी०बी०एस०ई० के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में + 0.88 स्तर का सहसम्बन्ध है जो कि अति उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध गुणांक है यह प्रदर्शित करता है कि यदि सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता का स्तर बढ़ता है तो उनका आत्मविश्वास का स्तर भी बढ़ता है। सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्म विश्वास में अति उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध है, यहां पर शोध परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है तथा शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है।

तालिका संख्या-8

8.उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता आत्म विश्वास में सहसम्बन्ध का अध्ययन।

शून्य परिकल्पना

उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं होता है।

उत्तराखण्ड बोर्ड	छात्रों की संख्या	माध्य	मानक विचलन	सह-सम्बन्ध गुणांक
परीक्षा चिन्ता	250	17.644	7.20	0.81
आत्मविश्वास		24.60	6.804	

तालिका के अनुसार उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में + 0.81 स्तर का सहसम्बन्ध है जो कि अति उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध गुणांक है यह प्रदर्शित करता है कि यदि उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता का स्तर बढ़ता है तो उनका आत्मविश्वास का स्तर भी बढ़ता है। उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्म विश्वास में अति उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध है, यहां पर शोध परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है तथा शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है।

विश्लेषणद्वारा प्राप्त निष्कर्ष:

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
5. सी०बी०एस०ई० बोर्ड तथा उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों में परीक्षा चिन्ता उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की अपेक्षा कम होती है।
7. सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।
8. उत्तराखण्ड बोर्ड के छात्रों की परीक्षा चिन्ता तथा आत्मविश्वास में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 अग्रवाल, के०सी० "बाल मनोविज्ञान" श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2009
- 2 आलम गौस काजी, एवं अन्य "आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान" नरेन्द्र जैन मोतीलाल बनारसी दास बंगलो रोड, दिल्ली- 2002
- 3 उपाध्याय ऋचा, "उच्चतर माध्यमिक एवं स्नातक कक्षाओं की छात्राओं की सहशिक्षा जीविकोपार्जन तथा पारस्परिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" सी०बी०एस० यूनिवर्सिटी, मेरठ
- 4 श्रीवास्तव, डी०एन० "व्यक्तित्व का मनोविज्ञान" श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2 (2009)
- 5 मंगल, एस०के० "शिक्षा मनोविज्ञान" PHI Learning Pvt. Ltd., नई दिल्ली- 2011
- 6 "भारतीय आधुनिक शिक्षा" एन०सी०ई०आर०टी० कैम्पस, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016, वर्ष-27, अंक-2, अक्टूबर-2004
- 7 सिंह, अरूण कुमार "आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान" नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, दिल्ली- 2010
- 8 मंगल, एस०के० "शिक्षा मनोविज्ञान" PHI Learning Pvt. Ltd., नई दिल्ली- 2011
- 9 वरौलिया, ए० मंगल अंशु, अग्रवाल, नीतू "शैक्षिक अनुसंधान की विधियां समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी" राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा- 2006
- 10 शर्मा, ओ०पी०, रामपाल सिंह "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी" श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2 (2009)